PROF. N.G. RANGA : You have done your duty.

SHRI H. N. BAHUGUNA : You have done a good work.

17.14 Hrs.

BAN ON EXPOSURE OF WOMAN'S BODY IN ADVERTISEMENTS BILL*

MR. DEPUTY-SPEAKER : The House will now take up the next Bill. Shri Mohan Lal Patel.

श्री मोहन लाल पटेल (जूनागढ़) : उपाध्यक्ष महोदय, मेरा बिल बैन आन एक्सपोजर आफ वोमैन्ज बाडी इन एडवरटाइजमेंट्स बिल यानी विज्ञापनों में नारी शरीर प्रदर्शन पर पाबन्दी विधेयक है। मुझे बड़ी खुशी है कि सारे भारत की महिलाओं की जो फीलिंग्ज हैं जो लोग सामाजिक संस्थाओं में काम कर रहे हैं, उनकी जो फीलिंग्ज हैं, उनको इस सदन में रखने का मुझे मौका मिला है। उसके लिए आपका आभारी हूं। इस सदन में मैंने जब यह बिल रखा तो उसके बाद मेरे पास सारे भारतवर्ष से कई संस्थाओं से, जो सामाजिक परिवर्तन के लिए काम कर रही हैं, बहुत सारे खत प्राप्त हुए और बहुत सारे पोस्टर्स मिले जिनका वजन मैं समझता हूं 20-30 किलो से कम नहीं होगा। उनमें से थोड़े मैं यहां पर भी लाया हूं। बहुत सारे डेपुटेशन भी मुझ से मिलने के लिए आए। उन्होंने कहा कि आज तक जो भावनायें हम प्रदर्शित करते रहे हैं उनको सालों के बाद संसद में रखा गया है और इसके लिए हमारा आपको पूरा सहयोग है।

उपाध्यक्ष महोदय, कई बिल ऐसे होते हैं जिनके दो पहलू होते हैं लेकिन यह बिल ऐसा है जिसका केवल एक ही पहलू है। हमारी जो भारतीय संस्कृति है ...(**व्यवधान**)

SHRI MOOL CHAND DAGA (Pali) : Sir, this matter concerns the information and Broadcasting Ministry. The Minister concerned is not present here.

MR. DEPUTY-SPEAKER : The matter concerns the Home Ministry. The Minister is present.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI P.C. SETHI) : This subject has been transferred to the Home Ministry.

MR. DEPUTY-SPEAKER : Now, Mr. Patel, you can go ahead.

श्री मोहन लाल पटेल : उपाध्यक्ष महोदय, यह विधेयक लाने के पहले भी इस सदन में इस बारे में बहुत से प्रयत्न किए गए हैं। सदन के बाहर भी प्रयत्न हुए हैं। सामाजिक परिवर्तन करने के लिए आजकल बहुत से प्रयत्न किए जा रहे हैं चाहे वह व्यक्तियों के द्वारा हों, सामाजिक संस्थाओं के द्वारा हों या स्वयं सरकार द्वारा हों। सरकार द्वारा भी सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए बहुत से विधेयक यहां पर लाए गए हैं और बहुत से पास किए गए हैं और आगे चलकर सरकार का विचार और भी विधेयक लाने का है। सरकार ने अभी तक बलात्कार, आत्म हत्या, तलाक आदि के बारे में बहुत से कानून बनाए हैं और सदन के सदस्यों की इच्छा के अनुरूप नये नये विधेयक सदन में ला रही है। इसके बावजूद समाज में जो सामाजिक बुराइयां बढ़ रही हैं उसका कारण क्या है? यह जो बलात्कार बढ़ रहे हैं, आत्महत्यायें बढ़ रही हैं और तलाक वगैरह बढ़ रहे हैं इसके मूल में मैं समझता हूं नारी की देह का नग्न प्रदर्शन है। आजकल खुले आम बाजारों में हो रहा है उससे यह बुराइयां बढ़ रही हैं। आज ऐसे पोस्टर छपते हैं जिनको भाई-बहन या बाप-बेटी एक साथ देख नहीं सकते हैं। चाहे आप मैगनीज लीजिए या साइन-बोर्ड लीजिए या रास्तों में लगे हुए पोस्टर लीजिए वह इतने भद्दे होते हैं कि उनको वे एक साथ देख नहीं सकते हैं। स्त्री के देह के नग्न प्रदर्शन पर अगर पाबन्दी लगा दी जाए तो इससे क्या नुकसान

*Published in Gazette of India Extra-ordinary, Part-II, Section 2 dated 12.8.83.

होगा ? कोई नुकसान नहीं होगा। भारत की कुल आबादी में 50 प्रतिशत महिलायें हैं और यह उनका घोर अपमान है। पता नहीं भारत की महिलायें इस बारे में क्यों चुप हैं। कभी कभी उनकी ओर से आवाज उठती है लेकिन फिर वह आवाज बन्द हो जाती है। कुछ नतीजा नहीं निकलता है। मेरा उद्देश्य यह है कि इस विधेयक द्वारा भारत की जो असली संस्कृति है वह बनी रहे। इस के लिए सरकार को कुछ न कुछ कदम उठाना चाहिये, उस पर रोक लगानी चाहिये जिस से कि भारत के विभिन्न नगरों में जो भद्दी प्रदर्शनी होती है उस से हमारी नई पीढ़ी को बचाया जा सके। भारतीय संस्कृति में बताया गया है :—

नार्यः यत्र पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

जहां नारी की पूजा होती है वहां देवताओं का वास होता है। स्त्री और माता के महत्व को इस संस्कृत के श्लोक में दर्शाया गया है। स्त्री का जो महत्व है यह श्लोक उस की परिसीमा है। यह देश बुद्ध और महावीर का देश है, गाधी का देश है...

श्री मूल चन्द डागा : सीता और सावित्री का देश है।

श्री मोहन लाल पटेल : लक्ष्मी बाई और कई अन्य सन्नारियों का देश है। द्रौपदी का देश है जिस के चीरहरण को लेकर महाभारत का युद्ध हुआ। हमारे यहां अनेक ऐसी वीरांगनायें हुई हैं जिन के द्वारा हम अपनी भारतीय संस्कृति का दर्शन कर सकते हैं। मेरे इस बिल को यहां लाने से पहले इस सदन में जो दो-तीन प्रयत्न किये गये, अब मैं उन के सन्बन्ध में कुछ बतलाना चाहता हूं। मेरे मित्र श्री कमल नाथ ने इस सदन में एक मुद्दा रखा था, मैं उस के एक पैराग्राफ को पढ़ कर सुनाता हूं—

"Mr. Kamalnath asked the Government to immediately bring in a legislation for banning vulgar and obscene advertisements in the newspapers, magazines and hoardings."

दूसरा उदाहरण मैं हिन्दुस्तान टाइम्स का देता हूं—उस में एक न्यूज छपी थी उस में यह फोटोग्राफ भी था। यहां की कई महिला संस्थाओं ने एक जुलूस निकाला था और जितने भद्दे पोस्टर्स जगह-जगह लगे थे उन को फाड़ डाला। इस न्यूज आइटम में लिखा है—

"In a symvolic protest, a group of women in the capital today marched through the streets defacing film hoardings depicting woman in obscene poses. A march in the Ferozeshah Kotla area was held by the Committee on the Portrayal of women in media in which are the representatives of so many institutions."

Their names have been given.

"The protest is part of the campaign against the successive nagative and distorted images of women in advertisements, films, TV, Radio which has lead to the growing violence and sexual harassment of women."

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि सरकार यदि इस सम्बन्ध में कुछ नहीं करेगी, इस पर पाबन्दी नहीं लगायेगी तो इस के नतीजे अच्छे निकलने वाले नहीं हैं। मेरे पास बहुत से पोस्टर्स आये हैं जिन में से सिर्फ एक-दो ही दिखलाना चाहता हूं। आप देखिये इस पोस्टर में नारी की देह का प्रदर्शन कैसे किया गया है। ये पोस्टर्स एडवरटाइजमेंट के हैं।

MR. DEPUTY-SPEAKER : Mr Patel, please don't exhibit it. If you wanted to do it, you must have taken my permission.

SHRI MOHAN LAL PATEL : There are so many posters which they are using in advertisements. I would like to ask you, Sir, whether we should see these posters there.

मेरे पास बहुत सारे पोस्टर्स आए हैं, खत आए हैं और बुकलेट्स आई हैं और मैं ऐसा समझता हूं कि सेल्स के प्रोमोशन में इस तरह के पोस्टर दिखाने की कोई जरूरत नहीं है। अगर नारी देह का प्रदर्शन किया जाए, तो उस पर पाबन्दी लगाई जाए। अगर इस तरह

के पोस्टरों में नारी देह का प्रदर्शन नहीं होगा, तो क्या स्कूटर नहीं बिकेंगे या कोई सौन्दर्य प्रसाधन नहीं बिकेगा। इसलिए यह जो नग्न प्रदर्शन किया जाता है, इस पर सरकार पाबन्दी लगाए। आज तक महिलाओं ने जो बाहर इसको रोकने के लिए प्रयत्न किये हैं और जो भावनाएं हैं, उन को देख कर सरकार को इस के बारे में कुछ सोचना चाहिए। कम से कम गवर्नमेंट यह तो कर सकती है कि जो हमारा एडवरटाइजमेंट का इन्स्ट्रूमेंट है, टी० वी०, जिस पर बहुत से सोफ्ट ड्रिंक्स के एडवरटाइजमेंट्स होते हैं और नंगी फिल्में आती हैं, वे ऐसी होती हैं, जिन को हम देख भी नहीं सकते। मैं ऐसा समझता हूं कि इस दिशा में आज तक जो प्रयत्न हुए हैं, वे कुछ छोटे दीखते हैं, नहीं तो उनका कुछ नतीजा जरूर निकला होता। तो मेरी यह प्रार्थना है कि इस विधेयक को सदन में सब का सहयोग मिले और इस के बारे में जितनी भी हमारी हिन्दुस्तान की महिलाओं की संस्थाएं हैं, उन के मेरे पास खत आए हैं और उन की भावनाओं को मैं यहां रखना चाहता हूं।

नारी के शरीर के खुले व्यापार के विषय में जितना भी कुछ कहा जाए; उतना ही कम है। हर एक उपयोग की वस्तुओं पर ऐसा भद्दा विज्ञापन छपता रहता है, जिस का जिक्र करना भी मुश्किल है और यहां पर दिखाने पर आप ने पाबन्दी लगा दी है।

I am placing this on the Table.

यह संस्कृति पाश्चात्य की हो सकती है, भारत की कभी नहीं और यह हमारे देश की संस्कृति नहीं हो सकती। पाश्चात्य संस्कृति में चाहे कैसा भी एडवरटाइजमेंट होता रहे। अगर हम इस पर पाबन्दी नहीं लगाएंगे, तो एक दिन ऐसा आएगा कि पूरे के पूरे नंगे फोटो छपते रहेंगे क्योंकि अब हम इसमें आगे बढ़ते जा रहे हैं। पहले जो एडवरटाइजमेंट्स में नारी-देह का प्रदर्शन किया जाता था, वह कम था लेकिन अब तो ऐसा लगता है कि इस को चाहे कितना भी आगे बढ़ा सकते हैं और इस में कोई रुकावट नहीं है। यह जो नग्नता की ओर हम आगे बढ़ते जा रहे हैं, तो एक समय ऐसा आएगा कि पूरे शरीर को बिना कपड़ों के एड-वरटाइजमेंट में छापा जाएगा और हम देखते रहेंगे। हमारे भारत देश की जो पुरानी संस्कृति थी, उस संस्कृति को देखने के लिए बाहर के लोग यहां आते थे और हमारे यहां की संस्कृति को सीखने के लिए वे यहां आते थे। यह ऋषि-मुनियों का देश है। इसलिए इन चीजों पर कम से कम कुछ कन्ट्रोल तो किया जाए क्योंकि हमारी जो नई पीढ़ी है, उस के मानस पर इस का खराब असर पड़ता है और इस के बारे में हमें सोचना चाहिए। अगर हम अभी इस के बारे में नहीं सोचेंगे, तो यह सामाजिक बुराई कभी समाप्त नहीं होगी।

MR. DEPUTY-SPEAKER : Mr Patel, you can continue next time.

17.30 Hrs.

HALF-AN-HOUR DISCUSSION
UNIFORM PRICES FOR FOODGRAINS

MR. DEPUTY SPEAKER : We shall now take up half-an-hour discussion. Shri H.N. Bahuguna.

श्री हेमवन्ती नन्दन बहुगुणा (गढ़वाल) : उपाध्यक्ष जी, मैं आपका अनुगृहीत हूं कि आपने मौका दिया इस आधे घंटे की बहस के लिये। यह उस अतारांकित प्रश्न के सिलसिले में हो रही है जिसका उत्तर पहली अगस्त को इस सदन में दिया गया था। इस बहस को शुरू करते हुए पहली मेरी शिकायत यह है कि सवाल मेरा कुछ था और उसका जबाब कुछ आया। जो सवाल मैंने पूछा था उसका पहला हिस्सा यह था—

> "Wil the Minister of Food & Civil Supplies be pleased to state whether Government will consider uniform price for foodgrains throughout the country."